मित्रता या दोस्ती का महत्व

नाम	मित्रता या दोस्ती का महत्व
सच्ची मित्रता का उदाहरण	कृष्ण एवं सुदामा
मित्रता दिवस	अगस्त का पहला रविवार
2024 में	4 अगस्त

प्रस्तावना :

मित्रता क्या होती हैं ये तो सब जानते हैं. लेकिन दुनिया में दोस्ती यानि मित्रता एक रिश्ता बनाया गया है जो कि हर उम्र के लोगों के लिए है. यह विभिन्न प्रकारों में होता है. लेकिन इसका महत्व बहुत अधिक और हर उम्र के लिए बहुत मायने रखता है. मित्रता वह नहीं होती जिसके साथ आप खेलते कूदते या पढ़ी करते हैं. यह वह होती है जो आपके साथ हमेशा रहती हैं आप अपने हर दुःख सुख ही नहीं बल्कि हर वो चीज अपने दोस्तों से शेयर कर सकते हैं, जो आप अपने किसी और रिश्ते से नहीं कर सकते. आइये हम आपको मित्रता के संबंध में जानकारी देते हैं.

दोस्ती मित्रता के प्रकार

बचपन की मित्रता :

जब हम छोटे से होते हैं. खेलने के लिए हमें हमेशा अपनी उम्र के किसी दोस्त की जरुरत होती हैं. कॉलोनी में हमें कई तरह के मित्र मिलते हैं पर उन

में भी कुछ हमें खास लगने लगते हैं, जिसके साथ हमें खेलना अच्छा लगता हैं. जिससे हम अपने खिलोने शेयर कर सकते हैं, जिसे हमेशा हम अपने साथ देखना चाहते हैं. ये वो मित्रता हैं जिसका पहला और आखिरी मतलब हैं खेल. बस इस उम्र की मित्रता में मनुष्य को खेलना ही सबसे अधिक प्रिय और महत्वपूर्ण काम लगता हैं और उनके इस कार्य में जो उनके सबसे अच्छे सहभागी हैं वे उसके खास मित्र बन जाते हैं.

स्कूल,कॉलेज एवं ऑफिस की मित्रता :

बच्चा बड़ा होता हैं. यह समय उसकी लाइफ का सबसे सुंदर समय होता हैं, जिसमें वो जिंदगी का सबसे अच्छा वक्त बिताता हैं, लेकिन यही वो समय होता हैं जब एक बच्चा अपना भविष्य बनाता हैं या बिगाड़ता हैं. इस समय दोस्तों का बच्चे की मानसिकता पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता हैं. अच्छी एवं बुरी संगति उस बच्चे के पुरे जीवन को प्रभावित करती हैं. स्कूल एवं कॉलेज के दौर में एक बच्चे को दोस्ती की सबसे ज्यादा जरुरत होती हैं.

पढाई के लिए, मनोरंजन के लिए यहाँ तक की मन में उठ रहे विचारों के लिए उसे एक हम उम्र साथी की जरुरत होती हैं.

ऑफिसियल लाइफ में व्यक्ति को मित्रों की बहुत आवश्यकता होती हैं. व्यस्त शीड्यूल के कारण मनुष्य मानसिक रूप से बहुत थक जाता हैं. ऐसे में मनुष्य को मित्र ही इस थकावट से बाहर निकालता हैं.

रक्त संबंध में मित्रता :

जरुरी नहीं दोस्ती केवल स्कूल,कॉलेज या गली मोहल्ले के हम उम्र के लोगों के बीच ही होती हैं. आज के समय में सबसे करीबी दोस्त माता, पिता, दादा दादी एवं भाई बहन ही होते हैं. जब ये रिश्ते अपनी उम्र के अनुभव को छोड़ अपने बच्चों के साथ उनके जैसे बन जाते हैं. उन्हें खेल खेल में सही गलत समझाते हैं तब ये रिश्ते ही सबसे बेहतर दोस्त कहलाते हैं. आज क्राइम इस कदर बढ़ रहा हैं कि बाहरी दुनिया पर व्यक्ति कम ही विश्वास कर पाता हैं ऐसे में दोस्त शब्द के मायने घर में ही तलाशने पड़ते हैं. रक्त संबंध से बने मित्रता के रिश्ते आज के समय में ज्यादा कारगर सिद्ध होते हैं.

जानवरों एवं पशु पक्षियों से मित्रता

मनुष्य केवल मनुष्य के मित्रता करें यह जरुरी नहीं. कई लोगों को पालतू जानवरों से बहुत अधिक प्रेम होता हैं. वे अपने दिल की सभी बाते अपने पालतू जानवर से करते हैं. भले ही उस जानवर से उन्हें कोई उत्तर प्राप्त नहीं होता लेकिन फिर भी वे उनसे बात करके स्वयं को हल्का महसूस करते हैं.

इस प्रकार यह थे मित्रता अथवा दोस्ती के प्रकार जो आमतौर पर हमारे सामने होते हैं और जो हमें इस सामाजिक जीवन का हिस्सा बनाते हैं.

मित्रता का महत्व

मित्रता का महत्व बहुत बड़ा हैं. जब भी व्यक्ति किसी अन्य के साथ स्वयं को परिपूर्ण समझे. उसके साथ उसकी तकलीफों को अपना समझे. अपने गम उसे कह सके. भले ही दोनों में न रक्त संबंध हो, न जातीय संबंध और

नहीं इंसानी,सजीवता का संबंध लेकिन फिर भी वो भावनात्मक दृष्टि से उससे जुड़ा हुआ हो यही मित्रता का अर्थ हैं. जैसे :

एक राइटर को अपने कलम अपनी डायरी से भी वैसा ही लगाव होता हैं जैसे किसी मित्र से. बचपन में छोटे बच्चो को अपने खिलोने से बहुत लगाव होता हैं. वे उनसे बाते करते हैं लड़ते हैं जैसे किसी मित्र के साथ उनका व्यवहार होता हैं ,वैसा ही वो अपने खिलोनो के साथ करते हैं. वही कई व्यक्ति ईश्वर से मित्रता करते हैं. उनसे अपने दिल की आपबीती कहते हैं. अपने सुख दुःख कह कर अपना मन हल्का करते हैं. ईश्वर में आस्था ही ईश्वर से मित्रता कहलाती हैं.

इन सब बातों का मतलब यही हैं कि मनुष्य एक ऐसा प्राणी हैं जो अकेला नहीं रह सकता. उसे अपने दिल की बात कहने के लिए किसी न किसी साथी की जरुरत होती हैं फिर चाहे वो कोई इन्सान हो, जानवर हो या कोई निर्जीव सी वस्तु या फिर भगवान.

उपसंहार

इस सभी बातों से यही समझ आता हैं मनुष्य किसी भी दौर में चले जाये उसे मित्र की जरुरत हमेशा रहेगी. एक सामाजिक प्राणी के तौर पर वो मित्र शब्द के बिना अधुरा हैं. कहते हैं न सुख बाटने से बढ़ता हैं और दुःख बांटने से कम होता हैं. इस पंक्ति को चरितार्थ करने के लिए हमें एक मित्र की हमेशा ही जरुरत होती हैं. मित्रता एक अनमोल बंधन हैं जो जीवन में होना हमारी जरुरत भी हैं और हमारा हक़ भी. अतः हमेशा स्वयं को किसी न किसी

दोस्ती के बंधन में जरुर बंधना चाहिये .यही एक सामाजिक जीवन का सत्य हैं समाज में कोई बिना किसी साथी, दोस्त, सखा के बिना नहीं रह सकता.